हमारी बात

पुरुष-प्रधान समाज में किसी रिश्तेदार, मित्र या बिल्कुल अजनबी पुरुष द्वारा स्त्री पर दुर्व्यवहार, अत्याचार या बलात्कार के हादसों की चर्चा हर काल में होती रही है। उनकी कड़े से कड़े शब्दों में भर्त्सना भी की जाती रही है। लेकिन स्त्री ही द्वारा स्त्री पर अत्याचार की अनकही कहानी के चर्चे भी अब कम नहीं। सास या ननद द्वारा बहू को तंग करने, यहां तक कि उसे जला कर मार डालने की वारदातें रोज़मर्रा की कहानी बन गई हैं। दूसरी ओर बहू द्वारा सास की उपेक्षा और उसके साथ दुर्व्यवहार की घटनाएं भी आम हैं।

बलात्कार के मामलों या भटक गई स्त्री को वैश्यालय तक पहुंचाने में भी रिश्तेदार स्त्री या पेशेवर औरत का हाथ रहता है। पहाड़ों या गरीब समाजों से भगा कर लाई लड़कियां बड़े शहरों के चकलों में भर्ती की जाती रही हैं। उनमें भी 'कुटनी' का ही हाथ होता है जो पहले उसे प्यार और हमदर्दी का मरहम लगा कर अपने जाल में फंसाती है, फिर नर्क में ढकेल देती है।

औरतें एक दूसरे के साथ ज्यादती करती हैं इसे नकारा नहीं जा सकता। लेकिन ऐसा क्यों होता है? क्या इसे रोका नहीं जा सकता? यह सवाल हम औरतों के लिए चुनौती है।

जो बहू जवानी में दुर्व्यवहार सहती है सास बन कर कठोरता क्यों बरतती है? क्या उसे वे दिन याद नहीं रहते जब वह बहू बन कर आई थी और सास-ननद का प्यार पाने को भूखी रहती थी? सास बन कर वह अपनी बहू से प्यार क्यों नहीं करती? इसका एक जवाब यह हो सकता है कि समय आने पर वह भी अपनी सत्ता जमा कर अपने प्रति दुर्व्यवहार का बदला लेना चाहती है। पर वह किससे बदला ले रही है? सास से जिसने उसे सताया था जो अब तक भगवान को प्यारी हो चुकी होती है, या बहू से जो बिल्कुल निर्दोष है।

इसे यूं समझें। क्या कोई पिता जिसका बचपन बड़े कष्ट में बीता अपने बच्चों को सुखी जीवन नहीं जीने देता? नहीं। शायद ही कोई पिता ऐसा हो जो यह सोचेगा कि उसका बचपन दुख में बीता इसलिए उसके बच्चे भी सुख से न रहें। तब सास क्यों बहू को दुख देती है? उसे अपने गले से क्यों नहीं लगाती? उससे अपना दुख क्यों नहीं बांटती और उसके साथ ऐसा व्यवहार कर जो स्वयं उसे नहीं मिला क्यों अपनी जीत नहीं मानती? वह बूढ़ी सास को चाहे माफ न कर सके, पर बहू को तो न सताए? यह कैसे न्यायोचित या तर्क-संगत है कि चूंकि सास को अपनी सास से दुर्व्यवहार मिला, इसलिए वह अपनी बहू से बुरा व्यवहार करेगी। इस तरह की सोच से समाज में विकृति बढ़ेगी, मिटेगी नहीं।

बहुत हद तक सास-बहू या ननद -भाभी के झगड़ों की जड़ हमारे दुर्भाग्यपूर्ण रीति-रिवाज हैं। बचपन से लड़की के दिल में ससुराल वालों के प्रति डर बैठा दिया जाता है जो बाद में नफरत में बदल जाता है। बहू सास-ननद को 'हौवा' मान कर ससुराल की दहलीज में पांव रखती है। इसके दो नतीजे होते हैं। या तो बहू दब-घुट कर जिंदगी बिताती है या शुरू से दुश्मन की भूमिका निभाने लगती है। दोनों ही सूरतों में रिश्ता सहज नहीं हो पाता और न परिवार में मधुरता आती है।

सास-ननद के हाथों दुर्व्यवहार सहकर जब वह सास बनती है तब वह अपनी सत्ता जमा कर संभवतः अपने पर हुए दुर्व्यवहार का प्रतिकार करना चाहती है। इसी भावना को हमें खत्म करना है, वरना पारिवारिक आक्रोश पीढ़ी-दर-पीढ़ी पलता जाएगा।

यदि औरतें एक-दूसरे को सहारा दें तो पुरुष-वर्ग उनका शोषण नहीं कर पाएगा।

ज्ञानेंद्र प्रसाद जैन